Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 7 | JULY 2019

राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत दस्तावेज़ - 'पल्लवी'
(A DOCUMENT FILLED WITH SPIRIT OF NATIONALISM : PALLAVI)

DR. SANJEEV KUMAR [1]
[1] ASSISTANT PROF IN HINDI, GOVT. COLLEGE BEETAN, DISTT UNA (HIMACHAL PRADESH)- 176601

ABSTRACT:

'पल्लवी' आधुनिक मध्यवर्गीय समाज में राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत डॉ.रमेश पोखरियाल 'निशंक' जी की महत्त्वपूर्ण कृति है। इस उपन्यास का उद्देश्य सहज मानवीय जीवन मूल्यों के साथ-साथ राष्ट्रीयता की भावना से साक्षात्कार कराना है, जो मूल्यहीनता के अराजक दौर में निःसन्देह प्रशंसनीय कार्य है। 'निशंक' जी का लेखन जीवन, समाज और देशभक्ति की भावना से गहरे जुड़ा हुआ है। इस रचना में भी उनकी दृष्टि समाज के मध्यवर्गीय सुख-दुःख व राष्ट्रीयता से जुड़ी रही है।

KEYWORDS:

राष्ट्रीयता की भावना, 'पल्लवी'

साधारणतया, एक सैनिक के परिजनों को बेटे की शहादत के पश्चात् किन-किन परिस्थितियों में रहते हुए कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता है इसी का दस्तावेज़ है 'पल्लवी'। इस कृति में पल्लवी, कैप्टन ध्रुव, बिन्दू तथा कैप्टन किशन के माध्यम से कथा आगे बढ़ती है। पल्लवी के रूप में एक ठोस और जाना -पहचाना -सा प्रामाणिक संसार पाठकों के सामने आता है।

'पल्लवी' उपन्यास का प्रारम्भ ध्रुव और पल्लवी के प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण करने के दौरान परस्पर प्रेम से होता है जो कालानुसार परिणय में परिवर्तित हो जाता है। शादी के तुरन्त बाद भारतीय सेना में कैप्टन ध्रुव का वलिदान पल्लवी के लिए किसी वज्र प्रहार से कम नहीं। देशभक्ति व समाज सेवा की भावना से परिपूर्ण पल्लवी ध्रुव के अधूरे सपनों को पूर्ण करने का दृढ़ निश्चय कर लेती है। ध्रुव से विवाह के बाद पल्लवी का सघन सम्बन्ध ध्रुव के परिवार से जुड़ जाता है और इस परिवार में विशाल परिवेश समा जाता है। 'निशंक' जी इसी विशाल परिवेश से पाठकों को अनेक पगडंडियों पर ले चलते हैं। उपन्यास पढ़ते-पढ़ते पाठक 'पल्लवी' का हिस्सा बन जाता है। यही कारण है कि कैप्टन ध्रुव और किशन का देश के लिए कुर्वान हो जाना पाठकों के मन पर अमिट प्रभाव छोड़ देता है और उनके संवेदन तंत्र को झकझोर कर रख देता है।

जब सेना के अधिकारियों द्वारा ध्रुव के अन्तिम संस्कार तथा क्रिया-कर्म हेतु सहायता राशि का चेक पल्लवी को सौंपा जाता है तो वह उसे लेने से एकदम मना कर देती है। उनसे कहती, "ध्रुव मरा नहीं है। उसके विचार, उसका मिशन अभी भी मेरे अन्दर जीवित है। फिर सहायता राशि कैसी? क्या मुँह दिखाऊंगी मैं ध्रुव को? क्या इसलिए उसने बलिदान दिया है कि मैं उसकी कीमत वसूल करूं?1 सम्मान राशि लौटाने पर थल सेनाध्यक्ष द्वारा पल्लवी से मुलाकात के लिए उसे दिल्ली बुलाया गया। उन्होंने पल्लवी से कहा, "आप इसे किसी की दया मत समझिए। यह तो देश के लिए दी गई कुर्बानी के लिए दिल से दिया गया सम्मान है।" पल्लवी, "आप मेरे पति की शहादत का वाकई सम्मान करना चाहते हैं तो प्लीज, मुझे उनका मिशन आगे बढ़ाने का अवसर दीजिए। सेना का अंग बनकर देश की सेवा करना चाहती हूँ मैं भी।"2

उपन्यास की नायिका पल्लवी ध्रुव से जानना चाहती थी कि ग्रेजुएशन के बाद वह भविष्य में क्या करना चाहता है? एक पल सोचे बगैर भी ध्रुव का दो-टूक जवाब था, "सेना में जाना चाहता हूँ। बचपन से इसके अलावा और कोई सपना ही मैंने नहीं देखा। देश की सेवा करने का अच्छा मौका और कहाँ मिलेगा।"3 वह पल्लवी से कहता, "माँ के उन अनमोल पलों को हम लौटा तो नहीं सकते, पर उन्हें आगे कोई ठेस न लगे यह कोशिश तो कर ही सकते हैं।"4 देश सेवा के साथ-साथ माँ-बाप के प्रति सेवा भाव और सम्मान की भी ध्रुव के मन में कमी न थी।

'पल्लवी' में अनेक घटनाएँ हैं जिनका चित्रण 'निशंक' जी ने समानांतर रूप में किया है। सीमा रेखा पर देश की रक्षा में तल्लीन, युद्ध के दौरान दुश्मन के साथ लोहा लेते हुए कैप्टन किशन हमेशा-हमेशा के लिए सभी देशवासियों को अलविदा कह देता है। पत्नी बिन्दू तथा किशन के परिवार के लिए यह समय किसी महाविपत्ति से कम न था परन्तु किशन के परिवार

के लिए अंधे की लकड़ी बनना बिन्दू के लिए नागवार गुजरा । अपने देश के लिए प्राणों की आहुति देने वाले कैप्टन किशन की पत्नी बिन्दू तो सास-ससुर के पास कुछ दिन जैसे मजबूरी में ही रुकी अन्यथा पहले ही निकल जाती । किशन की तेहरवीं ही थी जिस दिन बिन्दू ने सास-ससुर का घर छोड़ दिया । गाँव की एक बुढ़िया ने बिन्दू को सास-ससुर के साथ रहने का उपदेश दिया तो बिन्दू कहती, "अब क्या रखा है यहाँ पर मेरे लिए? मैंने कोई जिन्दगी भर का ठेका थोड़ी ले रखा है। सारी जिन्दगी तो इन्हीं के पीछे स्वाहा कर दी अपनी। अरे ! अब भी यहीं पड़े रहे तो हो गया कल्याण।"5

सेना में कैप्टन के पद पर तैनात किशन के गाँव के सम्बन्ध में 'निशंक' जी लिखते हैं, "यूँ तो शहर से किशन के गाँव की दूरी अधिक नहीं थी, लेकिन कुछ किलोमीटर की पक्की सड़क के बाद जब बस ऊबड़-खाबड़, धूल भरी सड़क पर चलने लगती तो उस की गति स्वयं कम हो जाती। यह कच्ची सड़क भी दो वर्ष पहले ही गयी है गाँव तक।"6 'निशंक' जी के इन शब्दों में वर्तमान भारतीय गाँवों के पिछड़े होने के साथ-साथ ग्रामाँचल का यथार्थ भी अभिव्यक्त हुआ है। ऊंच-नीच तथा अमीर-गरीब में भेदभाव व लालच आदि के अनगिनत संदर्भ 'पल्लवी' में प्रासंगिक कथाओं के रूप में उभर कर आये हैं। एक ओर रमाकान्त जैसे घमण्ड़ी और पूर्णतः मोह माया में डूबे हुए लालची प्रवृति के स्वामी का चित्रण किया गया है वहीं दूसरी ओर ध्रुव और पल्लवी के रूप में सच्चे देशभक्त, समाजसेवी एवं साहसी पात्रों के चरित्र को उकेरा गया है। पल्लवी की ध्रुव से मित्रता का पता चलते ही पिता रमाकान्त कहने लगे, "फ्यूचर देखना चाहिए, अपना फ्यूचर। और फ्यूचर तो आज पैसे रूतबे में ही है। बाकी सब तो बकवास है। अपने से ऊँचे लोगों के साथ करीबी बनाओ और मित्रता करनी ही है तो फिर अपनी बराबरी वालों के साथ करो। पता नहीं किस-किस से दोस्ती कर लेती है। आखिर अपने घर परिवार के स्तर का भी ध्यान रखना चाहिए कि नहीं !"7

पल्लवी, समय की चेतना को पहचानकर, उसी के अनुरूप आचरण करते हुए, दर्द को भीतर ही भीतर पीते हुए अटूट आस्था के साथ आगे बढ़ती है। वहीं दूसरी ओर बिन्दू इन जीवन मूल्यों के पूर्णतः विपरीत चित्रित की गई है। किशन की शहादत के बाद, बिन्दू द्वारा सास-ससुर को त्यागकर अपने मायके जाकर रहना अटपटा सा लगता है, परन्तु मायके में परिवार के सदस्यों द्वारा बिन्दू से रूपये पैसे हड़पकर उसे घर से धक्का दे देना भी वर्तमान सामाजिक परिवेश में जानी-पहचानी सी घटना मालूम पड़ती है। जीवन में जब कोई सहारा नहीं मिलता तो बिन्दू पुनः सास-ससुर के पास आकर क्षमा याचना करती है। सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आए तो वह भूला नहीं कहलाता, इसी को आधार मानकर सास-ससुर बिन्दू को घर में स्वीकार कर लेते हैं। बिन्दू भी उन्हीं के साथ रहकर जीवन-यापन करने लगती है और उनका दुःख-दर्द भी बाँटने लगती है।

मूल्यहीनता के इस अराजक दौर में 'निशंक' जी ने ऐसा कथानक तलाश किया है जो ज़िन्दगी की तलाश को सघन करता है। नवीन शिल्प में ढला यह उपन्यास राष्ट्रभक्ति के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक सरोकारों के साथ साक्षात्कार कराता है। जीवन की दौड़ में थका-हारा, टूटा व्यक्ति ध्रुव और पल्लवी के जीवन से प्रेरणा पाकर जीवन जीने के लिए नयी दृष्टि प्राप्त कर सकता है। ध्रुव व पल्लवी का जीवन राष्ट्रभक्ति, समाजसेवा व अपंगों के लिए बहुत कुछ कर गुज़रने की मिसाल कायम किए हुए है। अन्त में बात उपन्यास के प्रदेय पर आकर टिक जाती है। जैसे पहले भी कहा जा चुका है कि उपन्यास का उद्देश्य राष्ट्रीयता की भावना तथा जीवन मूल्यों में गिरावट का साक्षात्कार कराना रहा है। पल्लवी के रूप में लेखक ने ऐसी साधारण नारी का चित्रण किया है जो अपनी साधारणता में अत्यन्त साधारण है।

REFERENCES

1. डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', पल्लवी, पृष्ठ 117-118 ।
2. यथोपरि, पृष्ठ 138 ।
3. यथोपरि, पृष्ठ 49 ।
4. यथोपरि, पृष्ठ 11 ।
5. यथोपरि, पृष्ठ 134 ।
6. यथोपरि, पृष्ठ 26 ।
7. यथोपरि, पृष्ठ 76 ।

'पल्लवी' (उपन्यास): डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', वर्ष 2012, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली ।

शोधकर्ता :-
डॉ संजीव कुमार, सहायक प्रोफेसर हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय बीटन,
जिला -ऊना (हिमाचल प्रदेश)